International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-03-2026, Accepted: 05-04-2026, Published: 20-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 77-78

भगवान परशुराम जयंती एवं अक्षय तृतीया का धार्मिक महत्त्व: भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में एक शोध–पत्र

डॉ. ए के द्विवेदी
प्रांत संयोजक, मालवा प्रांत, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, भारत

सारांश
भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्व और उत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों के संवाहक हैं। भगवान श्री परशुराम जयंती एवं अक्षय तृतीया ऐसे ही दो महत्वपूर्ण पर्व हैं, जो धर्म, न्याय, तप, दान और सतत समृद्धि के आदर्शों को स्थापित करते हैं। यह शोध–पत्र इन दोनों पर्वों के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक महत्व का विश्लेषण भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः भगवान परशुराम जयंती एवं अक्षय तृतीया का धार्मिक महत्व

भारतीय संस्कृति में समय–समय पर मनाए जाने वाले पर्व मानव जीवन के विविध आयामों को संतुलित करने का माध्यम हैं। भगवान परशुराम जयंती जहां अन्याय के विरुद्ध धर्म की स्थापना का प्रतीक है, वहीं अक्षय तृतीया अनंत शुभता, समृद्धि और सतत पुण्य का प्रतीक है। दोनों पर्व प्रायः वैशाख मास में आते हैं और मानव को धर्म, संयम एवं सेवा का संदेश देते हैं।

भगवान परशुरामः व्यक्तित्व एवं दर्शन

भगवान परशुराम, भगवान विष्णु के छठे अवतार माने जाते हैं। उनका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ, किंतु उन्होंने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध शस्त्र उठाया।
परशुराम जयंती भगवान विष्णु के छठे अवतार को समर्पित है। इस दिन परशुराम भगवान की पूजा अर्चना की जाती है। इस दिन परशुरामजी के भक्त उनकी पूजा करते हैं और व्रत भी रखते हैं। भगवान परशुरामजी से सुख समृद्धि की कामना भी करते हैं। वैसे तो परशुराम जी का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था। लेकिन, धर्म की रक्षा करने के लिए उन्होंने शस्त्र उठाएं थे, इसलिए धर्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भी माने जाते हैं और इस संदर्भ में इनके जन्म की एक रोचक कथा भी है।
भगवान परशुरामजी का जन्म वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि में प्रदोष काल में हुआ था।

धार्मिक महत्त्व

- **धर्म की पुनर्स्थापनाः** परशुराम ने अधर्म और अत्याचार का विनाश कर धर्म की स्थापना की।
- **शक्ति और तप का समन्वयः** वे ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज का अद्वितीय संगम हैं।
- **नैतिक अनुशासनः** उनका जीवन त्याग, तपस्या और अनुशासन का आदर्श प्रस्तुत करता है।

प्रतिनिधि छवियाँ

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्थान

परशुराम का चरित्र यह सिखाता है कि ज्ञान और शक्ति का उपयोग केवल लोककल्याण के लिए होना चाहिए। यह संतुलन भारतीय दर्शन की मूल भावना है।

अक्षय तृतीयाः आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

अक्षय तृतीया का अर्थ है "अक्षय" अर्थात् जो कभी नष्ट न हो। यह तिथि सनातन परंपरा में अत्यंत शुभ मानी जाती है।

धार्मिक मान्यताएँ

- इस दिन किया गया दान, जप, तप और हवन अक्षय फल प्रदान करता है।
- महाभारत के अनुसार इसी दिन पांडव को अक्षय पात्र प्राप्त हुआ था।
- भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की कथा भी इस दिन से जुड़ी मानी जाती है।

सांस्कृतिक महत्त्व

- विवाह, गृह प्रवेश, व्यापार प्रारंभ जैसे कार्यों के लिए अत्यंत शुभ दिन।
- सोना खरीदने की परंपरा समृद्धि और स्थायित्व का प्रतीक है।
- समाज में दान और सेवा की भावना को प्रोत्साहित करता है।

प्रतिनिधि छवियाँ

ग्रीष्म ऋतु का पदार्पण, हरियाली फ़सल को पका कर, लोगों में खुशी का संचार कर, विभिन्न व्रत, पर्वों के साथ होता है। भारत भूमि व्रत व पर्वों के मोहक हार से सजी हुई मानव मूल्यों व धर्म रक्षा की गौरव गाथा गाती है। धर्म व मानव मूल्यों की रक्षा हेतु श्रीहरि विष्णु देशकाल के अनुसार अनेक रूपों को धारण करते हैं, जिसमें भगवान परशुराम, नर नारायण के तीन पवित्र व शुभ अवतार अक्षय तृतीया को उदय हुए थे। मानव कल्याण की इच्छा से धर्म शास्त्रों में पुण्य शुभ पर्व की कथाओं की आवृत्ति हुई है, जिसमें अक्षय तृतीया का व्रत भी प्रमुख है, जो कि अपने आप में स्वयंसिद्ध है।

अक्षय तृतीया को ही पीतांबरा, नर–नारायण, हयग्रीव और परशुराम के अवतार हुए इसीलिए इस दिन इनकी जयंती मनाई जाती है। भारतीय कालगणना के सिद्धांत से इसी दिन त्रयेता युग का आरंभ हुआ। इसीलिए इस तिथि को सर्वसिद्ध (अबूझ) तिथि के रूप में मान्यता मिली हुई है।

तुलनात्मक विश्लेषण

- आधार
- परशुराम जयंती
- अक्षय तृतीया
- स्वरूप
- अवतार जयंती
- शुभ तिथि
- मूल संदेश
- धर्म रक्षा एवं न्याय
- अक्षय पुण्य एवं समृद्धि
- प्रमुख मूल्य
- तप, साहस, अनुशासन
- दान, श्रद्धा, सततता
- सामाजिक प्रभाव
- अन्याय के विरुद्ध प्रेरणा

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में समन्वय

भारतीय ज्ञान परंपरा समग्रता (Holistic Approach) पर आधारित है। परशुराम जयंती जहां व्यक्ति को आंतरिक शक्ति और नैतिक साहस प्रदान करती है, वहीं अक्षय तृतीया उसे सामाजिक दायित्व और सेवा की ओर प्रेरित करती है।

दोनों मिलकर यह संदेश देते हैं कि—

"धर्म की स्थापना और लोककल्याण ही मानव जीवन का परम उद्देश्य है।"

निष्कर्ष

भगवान परशुराम जयंती और अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति के दो ऐसे स्तंभ हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। एक ओर जहां परशुराम न्याय और धर्म की रक्षा का संदेश देते हैं, वहीं अक्षय तृतीया सतत पुण्य, समृद्धि और सेवा की प्रेरणा देती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार, इन पर्वों का पालन केवल अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना का माध्यम है।

जीवनी

डॉ. ए. के. द्विवेदी, बीएचएमएस (स्वर्ण पदक विजेता), एमडी, एमबीए, पीएच.डी., 25 वर्षों से अधिक समय से पंजीकृत होम्योपैथ हैं। वे एस.के.आर.पी. गुजराती होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर में शरीर क्रिया विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हैं। वे देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत की कार्यकारी परिषद के सदस्य हैं। वे आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड (सीसीआरएच) के सदस्य, शिलांग मेघालय, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एनईएएच) के सदस्य, मध्य प्रदेश चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश (भारत) के अकादमिक बोर्ड के सदस्य हैं। वे एडवांस्ड होमियो हेल्थ सेंटर एंड होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत के निदेशक और सीईओ हैं और "सेहत एवं सूरत" (हिंदी मासिक चिकित्सा पत्रिका) के संपादक हैं।

संदर्भ

1. वेद एवं पुराण साहित्य
2. महाभारत
3. धर्मशास्त्र एवं स्मृतियाँ
4. भारतीय सांस्कृतिक ग्रंथ एवं परंपराएँ